14

याहोराम

एक कदम बनाम चलना

वचन पाठ: 2 राजाओं 1:17; 9:26

''शुरुआत तो की पर समापन नहीं किया'' कई लोगों के जीवन जीने के ढंग के वर्णन के लिए बेहतरीन शब्द। उन्होंने ''पूरा न करने वाले'' लोगों के रूप में काम किया और जीवन बिताया, जो उत्सुकता से कई कामों में उछल तो पड़े, उनके साथ बीच रास्ते तक गए और फिर छोड़ दिया।

अमारिल्लो, टैक्सस के एक चर्च बुलिटन में ओबरेमरगऊ के निकट बवेरियन पर्वतों में एक रेस्तरां के बारे में डिक मरसियर का एक लेख था। यह रेस्तरां शौकीनों के लिए चढ़ाई चढ़ने के लिए शिखर के रूप में बनाया गया पहाड़ के बीच रास्ते में ''विश्राम स्थल'' जैसा है। ठहराव की इस जगह को ''हाफ वे हाउस'' कहा जाता है। हैरानी की बात है कि इसे चलाने वाला आदमी इसे ''नाखुश जगह'' के रूप में दिखाता है और रेस्तरां के प्रबन्ध के रूप में उसका कार्य ''नाखुश काम'' जैसा है। जब उससे पूछा गया कि वह अपने काम को इस तरह क्यों दिखाता है तो उसने यह बताया:

> लोगों की बहुत बड़ी भीड़ पहाड़ पर चढ़ने के लिए जोश से शुरू करेगी। उनका अधिकतर जोश मेरे हाफ वे हाउस पर पहुंचने तक ठण्डा पड़ जाता है। एक ओर खिड़कियों का एक बहुत बड़ा विस्तार है जो नीचे के संसार की ओर खुलता है और पर्वतारोही सब इस आनन्द की अभिव्यक्ति और उस दृश्य की सुन्दरता पर झूम उठते हैं। परन्तु जब वे दूसरी ओर, पहाड़ की चोटी की ओर देखते हैं तो उनका सारा जोश और उमंग ठण्डा पड़ जाता है। वे उस बड़ी आग को ऊंची लपटों और आरामदायक कुर्सियों के साथ और रिफ्रैशमेंट काउंटर पर गरमा गरम कॉफी और सेंडविच देखते हैं और यह निर्णय लेते हैं कि वे काफी ऊपर आ गए हैं। उनमें से लगभग आधे लोग इससे आगे नहीं जाते। वे गाइड को बताते हैं कि वे थक चुके हैं, उनके पांव गीले हो गए हैं और बर्फ बहुत गहरी है।
>
> वे एक परेशान दल होते हैं, परन्तु प्रसन्न दिखाने की कोशिश करते हैं। एक बार तो जैसे किसी चुम्बक से खींचे गए हों, वे एक बड़ी खिड़की के पास जाते और भीड़ को चोटी पर चढ़ते हुए देखते हैं। धीरे-धीरे सब कुछ शान्त हो जाता है और उनमें से कोई पुकारता है, ''वे चोटी पर हैं!'' फिर पूरे दल पर उदासी छा जाती है। जब ऊपर जाने वाले लोग खिलते चेहरे, हंसते और लाल मुंह लेकर वापस आते हैं तो हाफ वे हाउस पर ठहर जाने वाले लोगों की शक्ल देखने वाली होती है।[1]

जब सौदा करने वाला काम को केवल दूर से देखता है तो हताशा और निराशा ही मिलती है।

धावक बताते हैं कि दौड़ने का सबसे कठिन भाग बीच का भाग होता है। पहले कुछ मील इतने कठिन नहीं होते, क्योंकि उसमें धावक तरोताजा होते हैं और उनमें काफी ऊर्जा होती है। अन्तिम एक या दो मील कठिन, परन्तु सहनशील होते हैं क्योंकि धावकों को मालूम होता है कि उनका खरतनाक रास्ता खत्म होने को है। बीच के वे भावशून्य, बिन बुलाए मील ही सबसे कठिन होते हैं। बीच की जगह पीड़ा और अनुशासन के अलावा और कुछ नहीं देती, परन्तु इस भाग को सहन करना आवश्यक है। हर सफल धावक को अपने आप में यह निर्णय लेना होता है कि वह उसे निराश करके छोड़ देने का कारण बनने वाले बीच के स्थान को अनुमति नहीं देगा।

कोई काम शुरू करने वाले लोगों को बधाई दी जानी चाहिए; असंख्य अन्य लोगों के विपरीत जो अपनी ज़िम्मेदारी से कतराते हैं, कम से कम उन्होंने आरम्भ करना तो चुना। जीवन की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक कभी आरम्भ न करना है। सफर पर निकलना एक बहुत बड़ा कदम है। परन्तु असली महत्व किसी भी कोशिश को पूरा करना है। हम उन पर तरस खाते हैं, जो कोशिश करके आरम्भ तो करते हैं परन्तु दिल छोड़ देते हैं और उसे पूरा करने के लिए धीरज नहीं जुटा पाते। बीच में छोड़ देना बुरी बात है और अन्त तक काम में लगे रहना वीरता।

छोड़ देने वालों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहले कुछ लोग, जो आरम्भ करने की शपथ लेते हैं, परन्तु कभी शपथ पूरी नहीं करते। वे निर्णय लेकर एक कदम सही दिशा में बढ़ाते हैं, परन्तु शपथ को पूरा करने के लिए अगला कदम कभी नहीं उठाते। दूसरे ऐसे लोग हैं, जो कुछ कदम उठाकर फिर छोड़ देते हैं। वे भीड़ में से उन लोगों में से हैं, जो सफ़र में कुछ मील चलकर रुक जाते हैं। तीसरा कई लोग आधा रास्ता पार कर लेते हैं, परन्तु थककर मंजिल पर पहुंचने से पहले ही छोड़ जाते हैं। वे सबसे अफसोसनाक समूह के लोग हैं, क्योंकि वे मंजिल के करीब आकर हार मान लेते हैं।

आइए पहले समूह अर्थात पहला कदम उठाने वालों पर विचार करते हैं, जो पहला कदम उठाने वाले लोग हैं, परन्तु चलते नहीं हैं। वे प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु निभाते नहीं। वे सही दिशा में बढ़ते हैं, परन्तु शुरू करते ही खत्म कर देते हैं।

इस्राएल का नौवां राजा यहोराम इस असामान्यता का विशिष्ट उदाहरण है। अहज्याह निसन्तान मर गया, इसलिए इस्राएल के राजा के रूप में शासन करने के लिए अहाब यारोबाम का दूसरा पुत्र था। अहज्याह की समय से पूर्व मृत्यु पर याहोराम सिंहासन पर बैठा उसने 852 से 841 ई.पू. तक बारह साल राज किया (2 राजाओं 3:1)।

आम गलती

बहुत देर बाद इस्राएल के किसी राजा के बारे में कोई सराहनीय बात कही जा सकती है। उसने सच्चाई की ओर एक छोटा साकदम उठाया। उसने उस मूर्ति को जो उसके पिता अहाब ने लगाई थी, उठवा दिया। आप कहते हैं, ''यह कोई बड़ी बात नहीं है!'' परन्तु कम से कम एक कदम तो है। वह बुरा था परन्तु उसने एक अच्छी पहल की।

> उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है नौभी उस ने अपने माता-पिता के बराबर नहीं किया वरन अपने पिता की बनवाई हुई बाल की लाठ को दूर किया (2 राजाओंb:2)।

यहोराम के कामों का अधिक विवरण नहीं दिया गया है, परन्तु ऐसा लगता है जैसे थोड़ी देर के लिए उसने उस काम को करने के लिए कदम बढ़ाया जो उसे करना चाहिए था। उसने सही दिशा में चलना जारी नहीं रखा परन्तु सुधार के लिए उसने अपने कदम अवश्य बढ़ाए।

उसने राजनैतिक कारणों से मूर्ति को हटाया हो सकता है, न कि परमेश्वर की मानने की वास्तविक इच्छा से। उसने शायद यह लोगों को लुभाने के लिए किया। स्पष्टतया बालवाद के प्रति ईज़ेबेल का कट्टरवाद और अहाब की स्वीकृति लोगों में घर कर गई थी। यहोवा की आराधना की जगह बाल की पूजा कराने की ईज़ेबेल की कोशिश दम तोड़ने वाली थी, धन्यवाद हो परमेश्वर की एक आदमी वाली सेना एलिय्याह का। आगे हम देखेंगे कि इस्राएल में बाल के पुजारियों की गिनती कम हो चुकी थी और येहू ने इन पुजारियों की बहुसंख्या को मारने के लिए बाल के एक मन्दिर में इकट्ठा कर लिया (2 राजाओं 10:18)। ऐसी घटना हमें यह विश्वास दिलाती है कि आम लोग यहोवा की आराधना फिर से करने लगे थे; वरना येहू द्वारा किया जाने वाला यह सुधार इतनी आसानी से नहीं हो सकता। इस समय पर आम लोगों का विचार अवश्य ही बाल की अपेक्षा यहोवा की आराधना करना रहा होगा। इस बदलाव को देखते हुए यहोराम ने लोगों का समर्थन पाने के लिए उस मूर्ति को गिराया होगा न कि अपने किसी विश्वास के कारण।

यहोराम को संदेह का लाभ देते हुए हम कह सकते हैं कि उसके द्वारा किया जाने वाला एक बार का काम सुधार के लिए अच्छा निर्णय लेने की उसके मन की हलचल होगी, हमें फिर भी मानना पड़ेगा कि उसके निर्णय से अगले किसी कार्य में अगुआई नहीं मिली। उसने केवल एक छोटा सा कदम उठाया, यानी वह चला नहीं। यदि उसने मूर्तिपूजा को हटाने का एक प्रयास किया तो यह केवल एक अपर्याप्त कदम था न तो जिसका अर्थ था और न ही अधिक देर तक रहा।

अपने शासन में यहोराम ने यहोशापात के माध्यम से यहूदा के साथ निकट सम्बन्ध बनाए रखा। शायद इस प्रभाव से उसे अपने पिता, माता और भाई से अच्छा माना जाता था। उसने अहाब की बाल की मूर्ति गिरा दी, जैसा कि हमने देखा है, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुए लेखक ने यह जोड़ने में कोई ढील नहीं की कि उसने यारोबाम की मूर्तियों को वैसे ही रहने दिया (2 राजाओं 3:2, 3)। इस प्रकार वह वास्तव में कभी परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ा।

उसके जीवन का यह भाग, उसके द्वारा किया गया छोटा सा यह सुधार हमारे द्वारा जीने में की जा सकने वाली ढेरों गलतियों को दिखाता है। हमें ऐसे दिखावटी दावे न करने में सावधानी बरतनी चाहिए, जिनका परिणाम पवित्र व्यवहार नहीं होता। बिना कर्त्तव्य लिए हम शपथ नहीं ले सकते।

अनर्थकारी परिणाम

भक्तिपूर्ण जीवन की ओर थोड़ी देर चलकर भक्तिपूर्ण जीवन को विकसित न करने वाला व्यक्ति पुरानी खटारा कार की तरह है, जो कहीं भी रुक जाती है। आप चाबी घुमाते हैं परन्तु गाड़ी केवल फटफट करके आवाज़ करती हुई थोड़ा सा चलकर रुक जाती है; यह कभी सड़क पर नहीं उतर पाएगी। यह तो यातायात का साधन न होकर केवल सिरदर्द अर्थात कबाड़ का पेंट किया हुआ ढेर है।

यहोराम तीन कारणों को दिखाता है कि ऐसे निर्णय पर पहुंचना जो कभी जीवनशैली को न बदल पाए सबसे बड़ी गलती क्यों है। वह हमें दिखाता है कि केवल एक कदम उठाकर आगे न

चलने वाला या वैसा जीवन न बिताने वाला बड़ी बुरी तरह से असफल होता है।

मनुष्य द्वारा उसकी सराहना नहीं होती

पहले तो धार्मिक जीवन के लिए कभी कदम न उठाने के लिए यहोराम का लोग आदर नहीं करते थे। उसके आस-पास के लोग उसे एक असफलता के रूप में, संकल्पहीन कायर व्यक्ति के रूप में देखते थे न कि जीवन के संघर्ष में सचमुच भाग लेने वाले के रूप में। ध्यान दें कि एलीशा नबी ने 2 राजाओं 3 में यहोराम को माना भी नहीं था।

मोआबियों ने अहज्याह के सिंहासन पर बैठने के समय इस्राएल की अधीनता का विद्रोह कर दिया था। शक्तिहीन, दुष्ट राजा होने के कारण अहज्याह इसका कुछ नहीं कर पाया था (2 राजाओं 3:4, 5)। अहज्याह ने दो साल के केवल कुछ भाग राज किया, इस कारण शायद यहोराम पहला राजा था, जिसे कर देने में मोआब की असफलता का सामना करना पड़ा था। उसका तुरन्त निर्णय मोआब को फिर से अपने शासन के अधीन लाने की कोशिश करना था। यह जानते हुए कि उसे सहायता की आवश्यकता है, उसने अपने पिता के सहायक यहोशापात से और एदोम के राजा यहूदा के मातहत से सहायता मांगी (2 राजाओं 3:7, 8)। दोनों राजा सहायता के लिए सहमत हो गए और युद्ध की योजनाएं बनाई जाने लगीं। उन्होंने लम्बे रास्ते से अर्थात मृत सागर के दक्षिणी सिरे के ऊपर से दक्षिण से मोआब तक पहुंच कर मोआब पर चढ़ाई की।

सात दिन के सफ़र से उनके पास खत्म हो गया था (2 राजाओं 3:9, 10)। क्षेत्र के चश्मे, जिनमें से वे पानी लेने के लिए आए थे, सूखे के कारण सूख गए थे और पानी की कमी के कारण वे बड़े परेशान हुए। यहोशापात ने यह जानने के लिए कि वे क्या करें, किसी नबी के बारे में पूछा और एलीशा की सिफारिश की गई जो पास ही रहता था (2 राजाओं 3:11)। तीनों राजा एलीशा से भेंट करने और उससे सहायता मांगने के लिए गए। निराशा भरे समयों में राजा भी भिखारी बन जाते हैं। यहोराम जो तीनों का प्रवक्ता था, एलीशा से मदद की गुहार लगाई। राजा से बिना किसी डर के एलीशा ने यहोराम की ओर देखा और उसे उसकी जगह बिठा दिया:

> तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, मेरा तुझ से क्या काम है? अपने पिता के भविष्यवक्ताओं और अपनी माता के नबियों के पास जा। इस्राएल के राजा ने उस से कहा, ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे। एलीशा ने कहा, सेनाओं का यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूँ, उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहूदा के राजा यहोशापात का आदर मान न करता, तो मैं न तो तेरी ओर मुह करता और न तुझ पर दृष्टि करता (2 राजाओं 3:13, 14)।

एलीशा को मालूम था कि यहोराम से आत्मिक मामलों से बात करना हॉलीवुड की किसी अभिनेत्री से शिष्टता या किसी बदमाश से ईमानदारी की बात करने जैसा होगा। उसे मालूम था कि यहोराम यहोवा की बात किसी संकट के कारण कर रहा है न कि विश्वास या समर्पण के कारण। इसलिए केवल यहोशापात के कारण एलीशा ने यहोवा को ढूंढ़ा और यहोवा ने उस पर प्रकट किया

कि यहोशापात के कारण इस्राएल को विजय दी जाएगी। उन्हें घाटी को गहरी खाइयों से भरने के लिए कहा गया था। परमेश्वर ने कहा कि उनके सामने वह पानी भेजेगा (2 राजाओं 3:16-19)। अगली सुबह खाइयों को पानी से भर दिया गया (2 राजाओं 3:20)।[3]

सुबह-सुबह जब मोआबी लोग युद्ध के लिए आए तो उन्होंने पानी में सूरज की झलक देखकर सोचा कि वे भयंकर लड़ाई के बाद हुए खूब-खराबे के कारण लहू को देख रहे हैं (2 राजाओं 3:22)। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि तीनों राजा एक-दूसरे के साथ लड़े होंगे जिससे लहू से जमीन लाल हो गई (2 राजाओं 3:23)। वे लड़ाई की लूट इकट्ठी करने के लिए छावनी ओर भागे। तीनों राजाओं की सेनाओं ने लापरवाह मोआबियों को मार डाला और उन्हें बुरी तरह से पराजित किया। जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, वे पूरे मोआब को नष्ट करते हुए नगरों में बढ़ते गए (2 राजाओं 3:25)। अन्त में उन्होंने कीर्हरेशेत में मोआबी राजा मेशा को घेर लिया और उसे खत्म करने की तैयारी की (2 राजाओं 3:25, 26)।

अंत्यत निराशा में मेशा ने सबके सामने अपने सबसे बड़े बेटे को एक दीवार पर बलिदान कर दिया (2 राजाओं 3:27)। शायद उसने यह निदंनीय कार्य यह सोचकर किया कि ऐसा बलिदान करने से उसकी सेना उत्तेजित होगी और इस्राएल का मनोबल टूटेगा। उसके कार्यों ने यहूदा के लोगों, एदोमियों और इस्राएलियों को इतना भयभीत कर दिया कि वे वहां से चले गए और उन्हें अकेला छोड़ दिया।[4]

एलीशा और परमेश्वर की सहायता से तीनों राजा मोआबियों को पराजित करने में सफल रहे थे (2 राजाओं 3:4-27), परन्तु मोआबी अधीनता में नहीं आए थे। उन्हें ''अपने घाव चाटने'' और इस निकट विनाश के बाद फिर से संगठित होने के लिए अकेले छोड़ दिया गया।

युद्ध से पहले यहोराम से एलीशा के व्यवहार से संकेत मिलता है कि राजा होने के लिए यहोवा की नज़र में यहोराम एक कमज़ोर बहाना था। नबी द्वारा उसके दिल का एक्स-रे किया गया था और उससे पता चल गया था कि वह क्या है, एक ऐसा अगुआ जो लोभी सहायता के लिए परमेश्वर को पुकराना था, परन्तु जिसने कभी परमेश्वर के निर्देश के अनुसार नहीं चलना था। कई और लोगों तरह वह परमेश्वर के लोगों को मिलने वाली आशिषें तो पाना चाहता था परन्तु उसके द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियां नहीं लेना चाहता था। यहोराम के लिए नबी का अर्थ बोतल में जिन्न वाला था जो उसकी कामुक इच्छाओं को मानने वालासेवक हो, न कि भक्तिपूर्ण जीवन में अगुआई देने वाला मार्गदर्शक।

सच्चाई से अप्रभावित

दूसरा, पूरा रास्ता चलने के बजाय केवल कुछ भाग चलने की त्रासदी को देखकर पता चलता है कि यहोराम का मन सच्चाई को कितना न मानने वाला हो गया है। यहोराम की इकलौती आशिषों में से एक उसके शासन का समय था। वह एलीशा नबी की सेवकाई के चरम के समय सिंहासन पर बैठा। उसने एलीशा के द्वारा परमेश्वर की ओर से दिए गए कुछ आश्चर्यकर्मों को देखा और उनसे लाभ उठाया था।

हमें लग सकता है कि कोई भी जिसे एलीशा की उपस्थिति में होने का दुर्लभ सौभाग्य मिला हो, वह उसके जीवन से प्रभावित होकर अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को मानने

के लिए सौंप देना चाहिए, परन्तु यहोराम ने कभी ऐसा समर्पण नहीं किया। उसने परमेश्वर के अदभुत कामों को देखा, सुना और उनमें भाग लिया; परन्तु फिर भी वह परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के किनारे पर ही रहा।

उदाहरण के लिए यहोराम को एलीशा से सीरियाई सेनाओं के ठिकानों तथा इस्राएल के विरुद्ध उनकी योजनाओं का प्रकाशन मिलता रहता था (2 राजाओं 6:10)। इस जानकारी ने यहोराम को अरामियों पर अतिरिक्त विजय पाने के योग्य बना दिया:

> और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी। तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करनेवाले हैं। तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेजकर, अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ (2 राजाओं 6:8-10)।

एलीशा के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह और अगुआई की इन अभिव्यक्तियों को देखकर यहोराम में विश्वासी हृदय और आज्ञाकारी मन आ जाना चाहिए था। तौ भी स्पष्टतया यहोराम कठोर मन राजा के रूप में अपना काम करता रहा।[5]

संदेही मन आमतौर सबूत से प्रभावित नहीं होता। यह तो ऐसा है, जैसे आधे-अधूरे मन वाला व्यक्ति सच्चाई से मुक्त हो गया हो। उसका मन ऐसे समर्पण के लिए बन गया है जो वह करेगा और संसार का कोई भी प्रमाण उसके निर्णय को बदल नहीं सकता।

हो सकता है कि किसी को इतनी पैनिसिलिन दी जाए, जिससे उसका शरीर वास्तव में इससे मुक्त हो जाए। यदि उसे कोई दवा दी जाती है जबकि उसे उसकी आवश्यकता न हो, तो उसका शरीर उस दवा का आदी हो जाएगा; फिर सचमुच में आवश्यकता पड़ने पर बीमारी का मुकाबला करने के लिए उस दवा का उस पर कोई असर न होगा। यहोराम उस ईश्वरीय प्रमाण से मुक्त हो गया होगा जो उसे दिया गया था।

यहोराम का क्या हुआ, यह कई साल पहले मियामी, फलोरिडा में हुई एक घटना से भी दिखाया जा सकता है। एक वैज्ञानिक को, जो वहां की सर्पशाला का निर्देशक था, उत्तरी अमेरिका में लाए गए सबसे खतरनाक कोबरा सांपों में से एक ने काट लिया। उसे अस्पताल में ले जाया गया, जहां लगता था कि वह थोड़ी देर में मर जाएगा। परन्तु हर कोई हैरान था कि वह मरा नहीं। वह ठीक हो गया। इसकी चिकित्सकीय व्याख्या सिर्फ इतनी थी कि उसे कम जहरीले सांपों द्वारा इतनी बार काटा गया था कि उसमें किंग कोबरा द्वारा काटे जाने से कोई फर्क नहीं पड़ा।[6]

कई बार आत्मिक तौर पर हमें इसी तरह काटा जाता है। यदि हम परमेश्वर की सच्चाई के प्रमाण का सामना करके इसे नज़रअंदाज करें तो सम्भवतया, ऐसा समय आएगा जब हम उस प्रमाण के आगे मूक हो जाएंगे। यहोराम ऐसा ही हो गया था।

परमेश्वर द्वारा अस्वीकृत

तीसरा, बिना समर्पित जीवन के द्वारा निर्णय लेने की बड़ी गलती का उदाहरण परमेश्वर द्वारा

यहोराम को ठुकराने का है। उस पर परमेश्वर का न्याय यह स्पष्ट कर देता है कि यहोराम परमेश्वर के लोगों के राजा के रूप में पूरी तरह से नाकाम था। यदि यहोराम ने अपनी बुराइयों से मन फिराकर मन फिराव के योग्य फल लाया होता तो हो सकता है कि एक और बार के लिए परमेश्वर न्याय को रोक लेता। परन्तु अपनी बुराई के कारण यहोराम अहाब के घराने पर परमेश्वर के न्याय कथन का अन्तिम पूरा होना था।

एलीशा ने राजा के रूप में येहू का अभिषेक करने के लिए ''नबियों के पुत्रों'' में से एक को तेल वाला सींग लेकर रामोत-गिलात में भेज दिया (2 राजाओं 9:1)। येहू को अलग कमरे में ले जाकर जवान नबी ने येहू के सिर पर तेल उण्डेल दिया और उसे अहाब के घराने का अन्त करने का जिम्मा दे दिया (2 राजाओं 9:3)। ईज़ेबेल के खतरनाक कामों के कारण एलीशा ने नाबोत के दाख की बारी में भविष्यवाणी की थी कि ईज़ेबेल को कुत्ते खा लेंगे (1 राजाओं 21:17-24)। अब यह भविष्यवाणी पूरी होनी थी।

अब इस्राएल का राजा येहू, जिसे परमेश्वर द्वारा स्वयं नियुक्त किया गया था, यिज्रेल में गया, जहां यहोराम अपने घावों का इलाज करा रहा था, जो अरामियों के साथ युद्ध में हुए थे (2 राजाओं 9:14-16)। यहोराम को आने वाले दल के बारे में बताया गया था परन्तु उसे यह सूचना नहीं मिल सकी कि कौन आ रहा है (2 राजाओं 9:17-20) उसके द्वारा सिपाहियों के आकस्मिक आने में अगुआई करने वाले की पहचान का पता लगाने के लिए भेजा जाने वाला हर दूत उनके साथ मिल जाता था। अन्त में यहोराम और यहूदा के राजा अहज्याह जो उसके साथ आ रहा था, स्वयं यह पता लगाने के लिए बाहर गए कि क्या हो रहा है (2 राजाओं 9:21, 22)। निकट पहुंचने पर यहोराम को समझ आया कि येहू ही है जो उनकी ओर आ रहा है। उसने घोषणा की कि येहू राजद्रोह कर रहा है। वह रानी ईज़ेबेल को मारने के लिए यिज्रेल में जा रहा था।

यहोराम ने ''विश्वासघात है'' पुकारा और अपना रथ मोड़ लिया। वह यिज्रेल की सुरक्षित शहरपनाह में वापस जाना चाहता था। येहू पुराना निशानेबाज था। उसने तीर कमान पर चढ़ाया और यहोराम को बीच में चीर डाला (2 राजाओं 9:24) तीर उसके दिल में से होता हुआ निकल गया और यहोराम अपने रथ पर झुक कर गिरा और मर गया। उसकी लाश नाबोत के खेत में (2 राजाओं 9:24-26) परमेश्वर के न्याय कथन को पूरा करने का स्मरण कराने के लिए फैंक दी गई। अहज्याह जो उसके साथ येहू द्वारा घायल किया गया था (2 राजाओं 9:27) मगिद्दो में भाग गया, जहां उसे येहू के सिपाही पकड़कर सामरिया में लाए और उसे मार डाला (2 राजाओं 9:27, 28; 2 इतिहास 22:7-9)। येहू ने यिज्रेल नगर में जाकर ईज़ेबेल को मार डाला, इस प्रकार अहाब के घराने का अन्त हो गया (2 राजाओं 9:30-33)।

यहोराम के जीवन की इस अन्तिम घटना से पता चलता है कि वह न केवल एलीशा जैसे परमेश्वर के लोगों द्वारा तुच्छ जाना गया था, बल्कि परमेश्वर ने भी उसका न्याय किया था। एक आत्मिक कायर परमेश्वर और मनुष्य दोनों द्वारा ठुकराया जाता है और वे उससे दूर रहते हैं। यहां तक कि कोई कपटी भी दूसरे कपटी को पसन्द नहीं करता। विश्वास का काम बलिदान और सेवा के ईश्वरीय जीवन द्वारा होना चाहिए वरना यह खोखले दावे के अलावा और कुछ नहीं है जो न तो स्वर्ग के और न पृथ्वी के किसी काम का है।

एक समकालीन प्रासंगिकता

यह पूछकर कि ''जो कुछ यहोराम ने किया वह उसने क्यों किया? वह वैसा राजा क्यों नहीं बना जो अपने आस-पास के धार्मिक दृश्य को बदल सकता था? वह परमेश्वर के मार्ग में क्यों नहीं चला?'' हम अपनी समकालीन स्थिति के लिए केवल एक कदम उठाकर आसानी से यहोराम की गलती को लागू कर सकते हैं। हम पक्का तो नहीं जान सकते परन्तु इतना अवश्य जानते हैं कि यदि यहोराम आवश्यक कदम उठाकर परमेश्वर के साथ चलने के लिए उसके पीछे चलता यानी जीने के लिए एक निर्णय लेने से आगे बढ़ता तो उसे कम से कम तीन रुकावटों को पार करना आवश्यक था।

पहले तो उसने *परम्परा की कठिनाई* का सामना किया होगा। देश को पूर्ण जागृत करने में अगुआई के लिए उससे दान और बेतेल में से बछड़े की पूजा को खत्म करना आवश्यक होना था। देश में से ऐसी शुद्धता लाना, उत्तरी राज्य के किसी और अगुवे द्वारा नहीं हो पाया था। सोने के बछड़े इस्राएल में इतने थे कि वे एक तरह से उनका राष्ट्रीय प्रतीक ही लगते थे। पूजा की ये स्थान आरम्भ में बनाए गए थे, जब दस गोत्रों को यहूदा और बिन्यामीन से अलग किया गया था। उसे अलग करने के लिए दानिय्येल की शक्ति चाहिए थी। मूर्तिपूजा को लोगों द्वारा स्वीकार कर लिया गया था और यह उनकी सोच में रच-बस गई थी। सोने के बछड़ों को हटाने के लिए यहोराम लगभग सारे इस्राएल में पाए जाने वाले विश्वासों और प्रथाओं को काटना आवश्यक था। यह तो पूरे देश के विरुद्ध एक आदमी की लड़ाई थी। राजा के लिए ऐसा लक्ष्य पाने के लिए सताव के बावजूद अत्यधिक साहस, स्पष्ट दर्शन और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता थी।

दूसरा, उसे *रानी के प्रभाव की समस्या* का सामना भी करना था। बेशक, पूर्ण जागृति के लिए देश में से बाल की पूजा के सभी स्थानों की सफाई करना आवश्यक था। याद रखें कि राजा की मां अभी ईज़ेबेल अभी जीवित थी। वह कुछ नियन्त्रण में आ गई होगी, परन्तु अपने स्वभाव और मन से उसके लिए इस्राएल में बाल की पूजा के सभी केन्द्रों का विनाश असहनीय होगा। रानी होने के साथ-साथ यहोराम की मां होने के कारण उस पर उसका बहुत प्रभाव होगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि बाल के साथ सही ढंग से पेश आने का निर्णय करने पर यहोराम के घर में क्या हुआ होगा? ईज़ेबेल ने उसके जीवन को नरक में बदल दिया होगा।

तीसरा, उसे इतनी बड़ी जागृति के आने से होने वाली *बड़ी तोड़-फोड़ के कष्ट* का सामना करना पड़ना था। मन फिराव और सुधार से होने वाले परिवर्तनों से लोगों को ''एलर्जी'' होती है। परमेश्वर को वास्तविक समर्पण के लिए आवश्यक होना था कि यहोराम मनुष्य के बनाए हुए सब धर्मों को खत्म करके इस्राएल को परमेश्वर के वचन में वापस लाकर देश में से और लोगों के दिलों में से सब बाहरी देवताओं को निकाल फैंके। इस आत्मिक क्रान्ति में से गुरजने के बाद पूरे देश के लिए शुद्ध घर आवश्यक था। शैतान ने इतनी तीव्रता से और शायद हिंसक ढंग से लड़ाई की।

यहोराम के लिए कठिनाई की यह पहाड़ियां ऊंची और रोकने वाली होंगी। उन पर चढ़ने के लिए पूर्ण वचनबद्धता और परमेश्वर की ओर पूरा झुकाव आवश्यक था। ऐसी जागृति का विचार ही यहोराम को थका देने वाला था। उसमें इसके लिए समर्पण या परमेश्वर के प्रति भक्ति नहीं थी। उसके लिए आसान प्रत्युत्तर आराम से रहकर अपने शासन का आनन्द लेना और यदि लोगों के

लिए आवश्यक होता तो अपने पिता द्वारा बनाई गई मूर्ति को हटाकर परमेश्वर के प्रति थोड़ा सम्मान दिखाना।

यहोराम का निर्णय मसीही जीवन के विषय में लिए जाने वाले आज के हमारे निर्णयों से अलग नहीं था। हम सचमुच में यह नहीं कह सकते, ''वह अलौकिक व्यक्ति है! उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार क्यों नहीं किया? यदि वह ऐसा करता तो हम उसे अब्राहम के पास बिठाने की कोशिश करते।'' यदि हम ऐसी बात कहते तो हम आने आप से पूछने से पहले कि ''हमारा क्या होगा? क्या हम ने अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को दे दिया है? क्या हम ने अनारक्षित समर्पण की जगह आसान रास्ता लिया है?''

इन तीनों पहाड़ियों पर चढ़ने के लिए जो परमेश्वर चाहता है वह अपना सब कुछ देना है। पहले तो हमें *परम्परा का झुकाव* पापना होगा। आज नये नियम के मसीही होने का अर्थ हर प्रकार की डिनोमिनेशन से सम्बन्ध तोड़ कर केवल मसीह की कलीसिया के रूप में रहना है। बाइबल में किसी डिनोमिनेशन का नाम नहीं मिलता, और परमेश्वर ने किसी को कोई डिनोमिनेशन बनाने के लिए अधिकृत नहीं किया है। उस ने हमें केवल मसीह की देह बनने के लिए कहा है। मानवीय नवीनता, धन, और बल से धार्मिक जगत पर थोपा गया डिनोमिनेशनवाद हमें एक ओर कर के अपने आप में एक अलग पहचान देता है। नये नियम का मसीही बनने के मार्ग पर चलने वाला आम तौर पर अकेले ही चलता है। उसे डिनोमिनेशन जगत से कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता, क्योंकि नये नियम की मसीहियत डिनोमिनेशनवाद की निंदा करती है।

दूसरा, पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित होने के कारण *विघटन की परेशानी* आवश्यक है। अपने आस पास के डिनोमिनेशनवाद को नकारने के कारण हम उस धार्मिक जगत में जिसे हम जानते हैं बुरे बन जाते हैं। अपने परिवारों, पदवियों और जीवनों के द्वारा वे डिनोमिनेशनों से इतना जुड़े हैं कि वे हमें तंग सोच वाले मानते हैं और यह सुनना भी पसंद नहीं करते कि डिनोमिनेशन बाइबल के विपरीत और परमेश्वर द्वारा अधिकृत नहीं है। यदि प्रचारक हर जगह मण्डिलियों में यह प्रचार करें कि सिर्फ नये नियम के मसीही बनने के लिए डिनोमिनेशन में से निकल आओ, तो कल्पना करें कि कितनी उथ्ज्ञल पुथल मच जाएगी! यदि यहोराम ने लोगों को सच्चे दिल से परमेश्वर की ओर वापस लाने में अगुआई की होती तो परमेश्वर को शांत समर्पण से पहले गड़बड़ अवश्य हुई होती! आज्ञापालन के होने से पहले तुफान अवश्य आता है। नये लियम की मसीहियत को इसकी पूरी शुद्धता में वापस लाने की इच्छा करने वाले हर व्यक्ति के साथ ऐसा ही होता है।

तीसरा हमें *अपनी एड़ियां खींचने वालों से* पीछा छुड़ाना आवश्यक है। आम तौर पर पीछे को खींचने वाले हमें मसीह की ओर नहीं, उससे दूर खींच रहे होते हैं। यहां तक कि आम मसीही भी मसीह को पूर्ण समर्पण का विरोध करते हैं। मैं एक महिला को जानता हूं जिसने सोलह साल की उम्र में केवल मसीही बनने का फैसला किया था। मसीह में अपने बपतिस्मे के बाद वह मसीह की पूर्ण आज्ञाकारिता की अपने मन की नई खुशी बताने के लिए घर गई। जब उसने घर जाकर बताया कि उसने क्या किया है तो वे उसे यह कह कर डांटने लगे कि ''तूने ऐसा क्यों किया?'' कितना दुखी करने वाला है! उस दिन से आज तक मसीह के साथ उसका जीवन अपने घर में उसकी अकेली की लड़ाई है। अपने सबसे प्रिय लोगों की ओर से उसे आज कभी किसी ने मसीही जीवन जीने में प्रेम से प्रोत्साहन नहीं दिया। यदि कलीसिया और इसकी स्नेहपूर्ण संगति न होती, तो शायद

वह निराशा की इस घड़ी में शायह विश्वासी न रहती।

अपने सामने इतनी ऊंची पहाड़ियां और ऊबड़-खाबड़ रास्ता होने पर यह कीना आसान है कि ''मेरे लिए परमेश्वर के प्रति थोड़ा सा समर्पण करना ही ठीक है। मैं बाल कीएक और केदी गिरा दूंगा। मुझे हर बात में परमेश्वर के साथ चलने की आश्यकता नहीं है। मैं अपने मित्रों और में आदरणीय और प्रशंसनीय बने रहना चाहता हूं। पागल बनने की क्या ज़रूरत है ? आखिर फिर से बाइबल के अनेसार करना और प्रभु की हर बात मानना बहुत कठिन है ! इसके अलावा डिनोमिनेशनें इतने अच्छे अच्छे काम कर रही हैं; वे सब बुरी नहीं हो सकतीं। यदि आप सचमुच बाइबल के अनुसार करना चाहते हो तो लोगों के साथ बहस करना छोड़ दो। मैं इस सब को छोड़ कर अपना छोटा सा समर्पण करूंगा।'' क्या अधिकतर लोग ऐसा ही नहीं करते ?

सारांश

यहोराम का सांकेतिक निर्णय असल में आज के कई लोगों से अधिक फर्क नहीं है। या है ? हम चाहें तो उसके द्वारा चुनी गई पसंद से सबक ले सकते हैं और उसकी नकल करने से इनकार कर सकते हैं। केवल एक कदम उठाने के बजाय आइए सचमुच में उस रास्ते पर जाने के लिए कदम बढ़ाएं जिस पर प्रभु ने हमें चलने को कहा है, इसका अर्थ और अंजाम चाहे जो भी हो।

यहोराम ने यदि सच्चे मन से परमेश्वर की बात मानी होती तो उसे आशीष मिलती। ईज़ेबेल को प्रोत्साहन न मिलता देश में उसके किए बदलावों की शिकायत होती और उाकी ज़बर्दस्त आलोचना होती। परन्तु परमेश्वर उसे स्वीकृत करता, एलीशा उसकी सराहना करता और वह उन सात हज़ार लोगों के साथ होता जो पवमेश्वर के लिए जी रहे थे। वह अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ और बल को देखता। वह संसार में धार्मिक यादों की विरासत छोड़ जाता जो यीशु के आने तक सम्भाल कर रखी गई होती। हां, याहोराम को आशीष मिली होती !

ये सब प्रतिज्ञसएं हमारे ऊपर भी लागू होती हैं। क्या आप परमेश्वर के साथ चलने और फिर वफादारी से उसे आगे ले जाने का निर्णय लेंगे ? सच्चा मसीही बनने की हिम्मत करें ! हां आप पर सताव होगा (2 तीमुथियुस 3:12)। जो काम आप कर रहे हैं हो सकता है कि आप के मित्रों को उसकी समझ न आए, पर जो परमेश्वर के लोग हैं वे आप के साथ होंगे। आप को मनुष्यों से चाहे न मिले पर स्वर्ग से शाबाशी अवश्य मिलेगी। जो नमूना आप पेश करेंगे वह सम्पूर्ण होगा और हर सम्भव अर्थ भरपूर भी। आप परमेश्वर के लिए वैसे ही जी रहे होंगे जैसे वह चाहत है कि आप जीएं, और वह आप कोअपनी सुरक्षा और प्रतिज्ञाओं के अधीन रखेगा। आप को वह अनन्त जीवन मिलेगा जो वह देता है। आप की सम्भाल का ज़िम्मा उस का होगा। वह आप को उस आग *से* या *में* निकाल लेगा जो आप के आगे आ सकती है। आप के साथ बहुत कम लोग होंगे, पर आप मसीहियत के उस मार्ग पर चल रहे होंगे जिसका पथ मसीह के लहू से बना है।

पसंद आपकी है: हम याहोराम के पीछे चलेंगे या फिर यीशु के ?

सीखने के लिए सबक:

पहला कदम उठाने का कोई लाभ नहीं है यदि अगला कदम नहीं उठाया जाना।

टिप्पणियां

[1]डिक मार्सियर, सेंट्रल हैरल्ड, सेंट्रल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अमारिलो, टैक्सस। [2]''यहोराम'' को कई बार संक्षेप में ''योराम'' भी लिखा जाता है। [3]सम्भवतया तीन राजाओं तथा मोआबियों की नज़र से दूर, किसी अन्य स्थान पर परमेश्वर ने बहुत बारिश दी, जिससे नालों और ढलानों में से पानी नीचे की ओर आ गया, जहां तीन राजाओं और उनके शत्रुओं ने छावनी डाली हुई थी। पानी खाइयों में जमा हो गया। आश्चर्यकर्म बारिश के समय और उसके आने के स्थान में था। [4]मोआबी पत्थर पर इस लड़ाई का विवरण तीन राजाओं के हाथों पूर्ण पराजय से अपने देश को बचाने के अन्तिम प्रयास के रूप में मेशा के अपने सबसे बड़े बेटे का बलिदान करने की बात नहीं बताई गई। मोआबी पत्थर पर मेशा के शब्दों में यह शेखी मारी गई है कि उसने इस्राएल को पराजित कर दिया। यह सच है कि मेशा द्वारा अपने बेटे को बलिदान करने पर तीनों राजा भाग गए, पर यह सच नहीं है कि मेशा ने इस्राएलियों को हरा दिया। [5]परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा विश्वास करने के यहोराम के पास और अवसर भी थे: वह एलिय्याह और बाल के नबियों के बीच होने वाले बड़े मुकाबले का गवाह बनने के लिए कर्मेल पहाड़ पर होगा (1 राजाओं 18)। यदि वह वहां नहीं था तो उसने इसका पूरा हाल सुना था। नि:संदेह नामान को यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाने की आज्ञा देकर एलीशा द्वारा चंगाई देने की बात भी उसे मालूम थी (2 राआओं 5)। उसे सामरिया की घेराबंदी की एलीशा की सच्ची भविष्यवाणी का पता था (2 राजाओं 6:24-7:20)। इन तीन तथा बाइबल में दी गई अन्य घटनाओं के अलावा एलीशा की लम्बी सेवकाई याहोराम के शासन जितनी ही थी। स्पष्टतया उसे एक सच्चे परमेश्वर की सच्चाई के सामने आने के बार-बार अवसर मिले। [6]ये दो उदाहरण विलियम एस. बेनोव्स्की ने अपने प्रवचन ''द प्वाइंट ऑफ़ नो रिटर्न'' (विलियम एस. बेनोव्स्की, द ग्रेट प्रीचर्स ऑफ़ टुडे, सीरीज़ [अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1967], 108) में सुझाए गए।